हेलो, गुड-बाई खिड़की

नॉर्टन जस्टर, चित्र: क्रिस रश्का

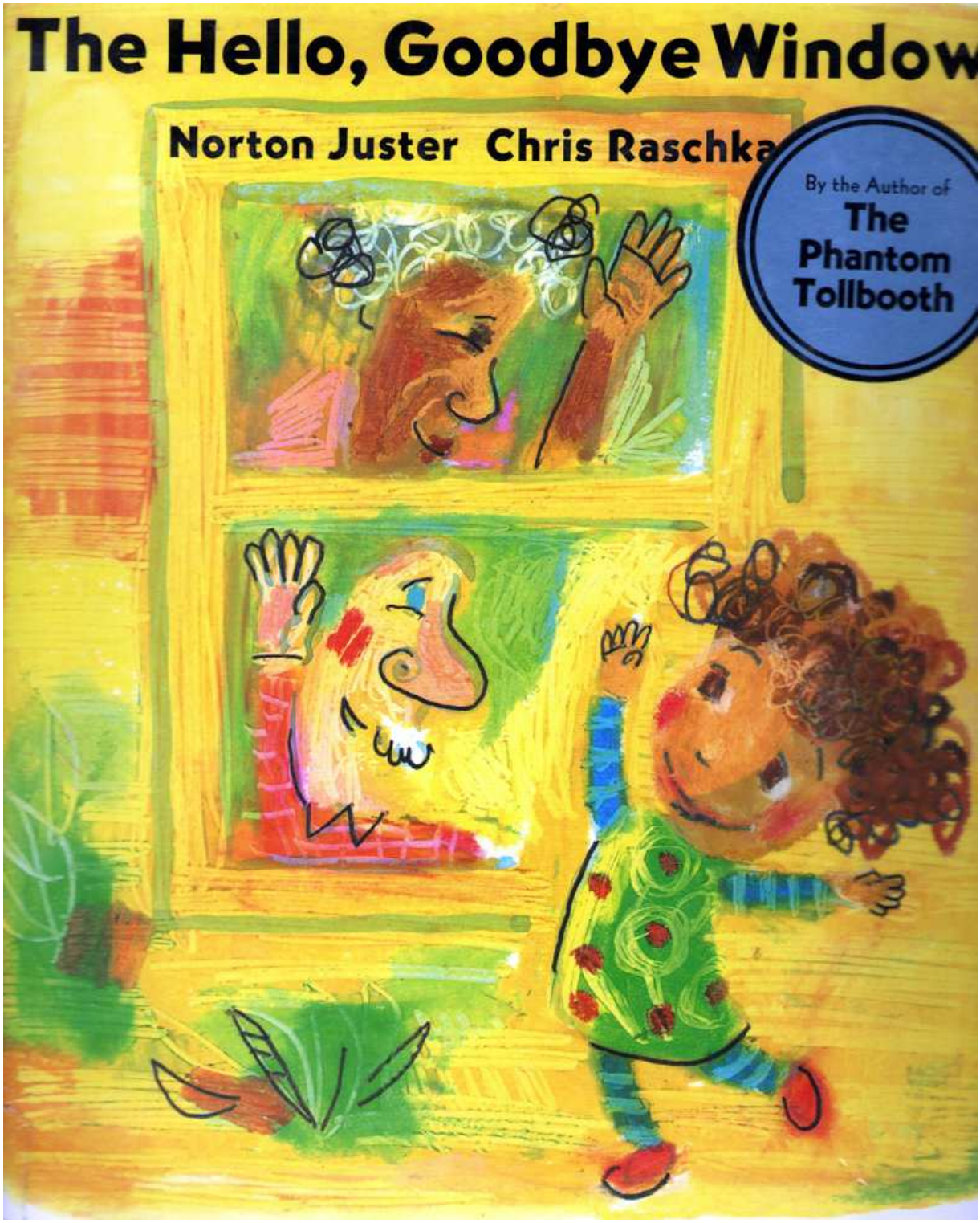

नाना (यानि नानी) और पोपी (यानि नाना) के घर में किचन की खिड़की, सिर्फ एक छोटी लड़की के लिए थी. उसके लिए वो एक जादुई खिड़की थी. दुनिया का हरेक ज़रूरी काम खिड़की के पास, उसके पार या उसके कहीं आसपास ही होता था. इस कहानी को छोटी लड़की ने खुद सुनाया है. ज़िन्दगी की छोटी-छोटी, आम चीज़ों में, ख़ुशी खोजना और उनका लुत्फ़ उठाना ही तो बचपन की असली पहचान है. यह एक प्रेम-गीत भी है, जो बच्चों और उनके नाना-नानी के बीच के, ख़ास रिश्ते को उजागर करता है.

हेलो, गुड-बाई खिड़की

नॉर्टन जस्टर

चित्र: क्रिस रश्का

हिंदी : विदूषक

MICHAEL DI CAPUA BOOKS HYPERION BOOKS FOR CHILDREN

नाना और पोपी शहर के बीचों-बीच एक बड़े घर में रहते हैं.
ईंट का एक रास्ता सीधे उनके पिछवाड़े तक जाता है.
पर वहां पहुँचने से पहले आपको किचन की खिड़की के बिलकुल सामने से होकर गुज़ारना होता है.

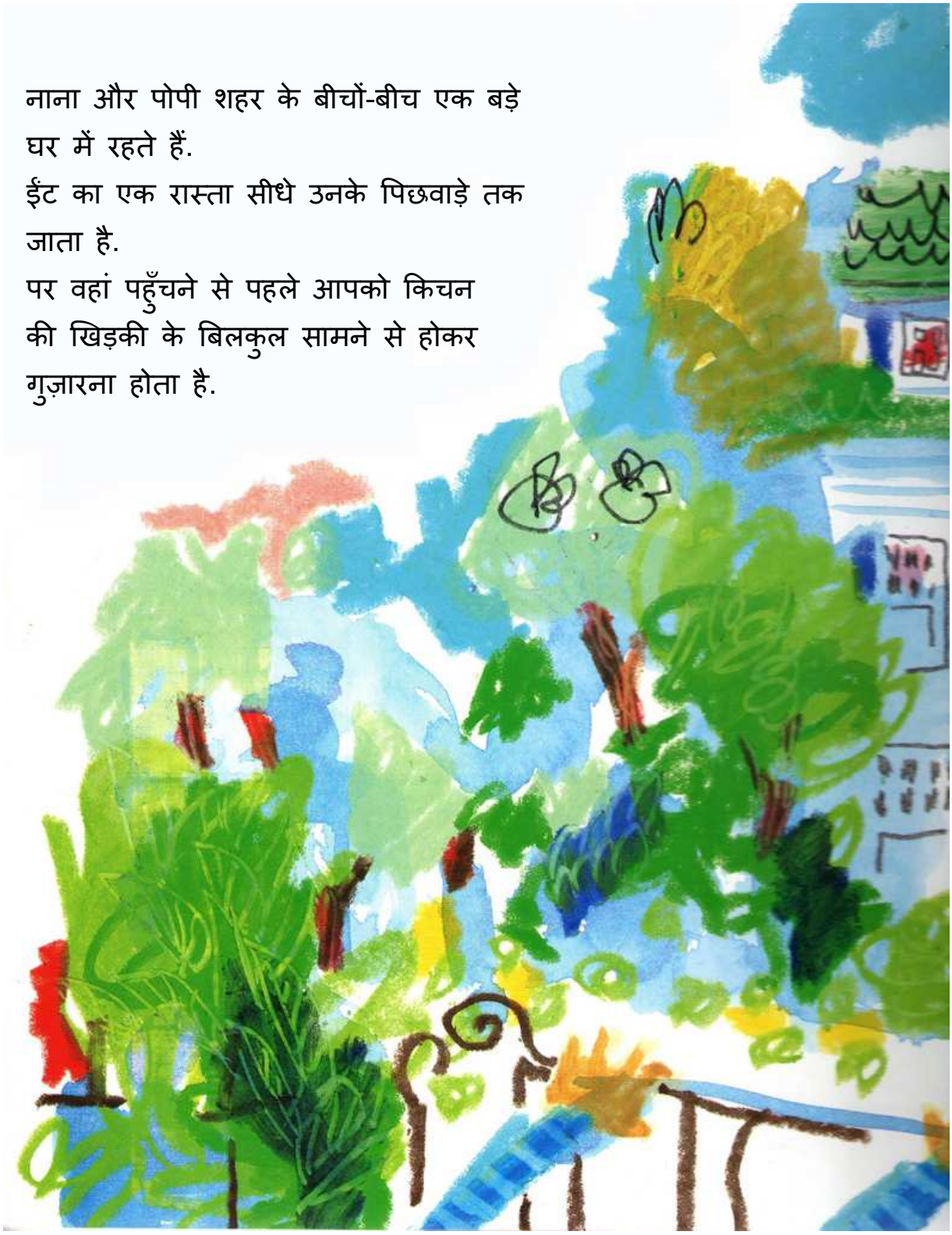

वो हेलो, गुड-बाई खिड़की है.
वैसे वो एकदम साधारण खिड़की दिखती है,
पर है नहीं.

नाना और पोपी अपना ज़्यादातर समय किचन में ही बिताते हैं. इसलिए मैं बाहर से फूल वाले गमले पर खड़े होकर खिड़की खटखटाती हूँ. फिर झट से नीचे सिर कर लेती हूँ. तब उन्हें पता भी नहीं चलता है कि शरारत किसने की! मैं अपने मुंह और नाक को, कांच पर चिपकाकर उन्हें डराती भी हूँ.

अगर वो किचन में न हों, तो फिर यह शरारतें करने का मज़ा ही क्या? तब मुझे उनके आने तक इंतज़ार करना पड़ता है.

अगर नाना और पोपी मुझे पहले देख लेते हैं तो वो भी मुझे चिढ़ाने के लिए भद्दे-भद्दे चेहरे बनाते हैं. वो मुझे देखते ही झट से छिपते हैं और फिर अचानक से प्रकट होते हैं. इससे मुझे बहुत हंसी आती है. इसलिए किचन के अन्दर घुसने से पहले भी मैं बहुत मज़ा करती हूँ.

आप ज़रा किचन को तो देखें. वो कितना बड़ा है. वहां पर एक मेज़ है जहाँ बैठकर मैं रंगीन चित्र बना सकती हूँ. मेज़ में कई दराजें हैं जिनकी चीज़ें निकाल कर मैं खेल सकती हूँ. पर सिंक के नीचे किसी भी चीज़ को छूने की मुझे मनाही है. उससे मैं बीमार जो पड़ सकती हूँ.

पूरा किचन शेल्फों से भरा है जहाँ कांच की बोतलों में अलग-अलग चीज़ें रखी रहती हैं. वहां एक ऊंचा स्टूल है, जिस पर खड़े होकर मैं अपने हाथ धो सकती हूँ. दीवारों पर पुराने ज़माने की तस्वीरें टंगी हैं. नाना कहती हैं कि जब मैं छोटी थी तो वो मुझे अक्सर सिंक में नहलाती थीं. सच में!

कभी पोपी मेरे लिए माउथऑर्गन बजाते हैं.
वो सिर्फ एक ही गाना बजाना जानते हैं.
वो गीत है, “ओह, सुज़ाना.”
पर वो इस गाने को कई अलग-अलग तरीकों से बजा सकते हैं. वो उसे तेज़ और धीमी गति से बजा सकते हैं.

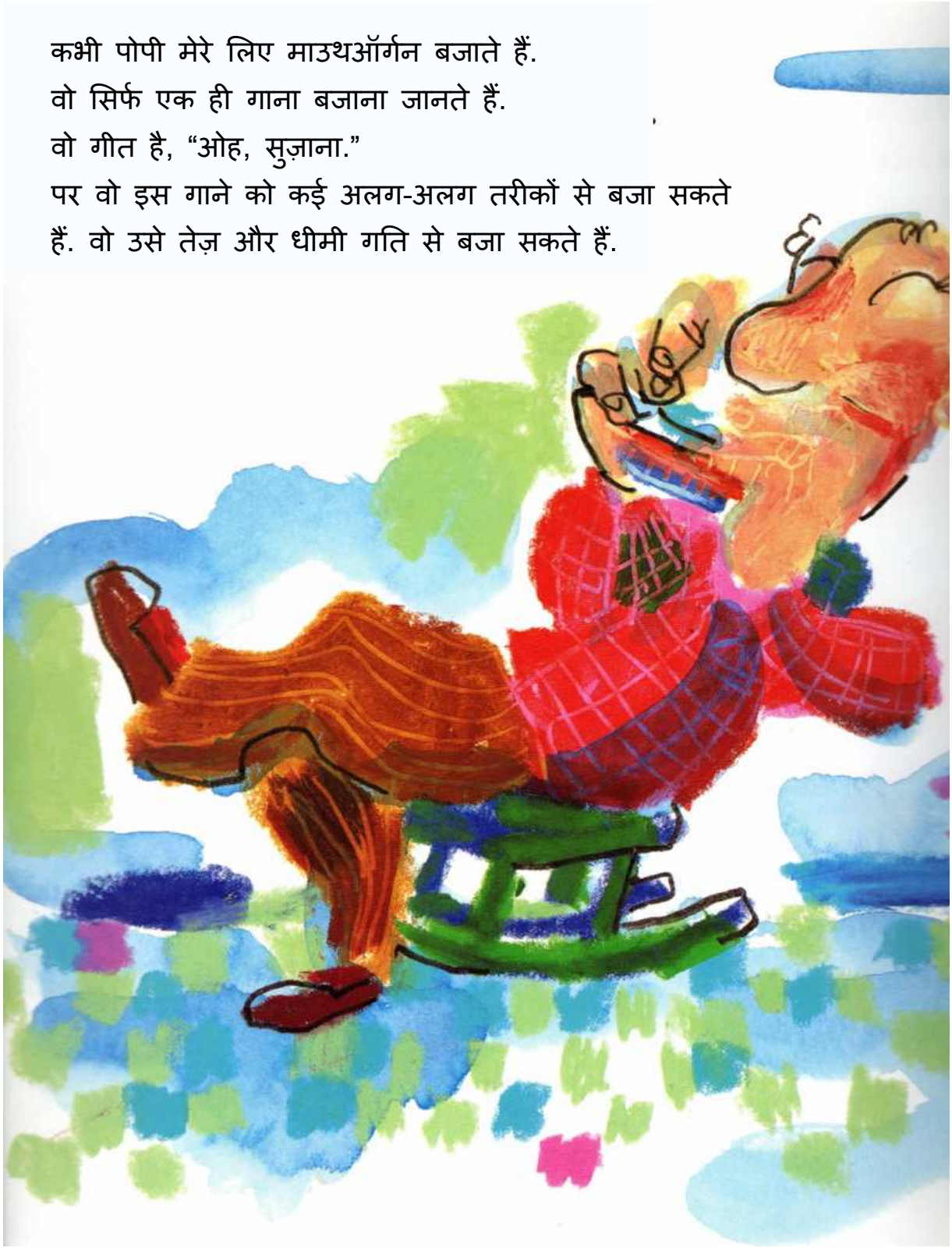

वो गाने को बैठे-बैठे या फिर खड़े होकर बजा सकते हैं. वो कहते हैं कि वो पानी पीते-पीते भी माउथऑर्गन बजा सकते हैं. पर सच बताऊँ तो मैंने उन्हें ऐसा करते हुए कभी देखा नहीं है.

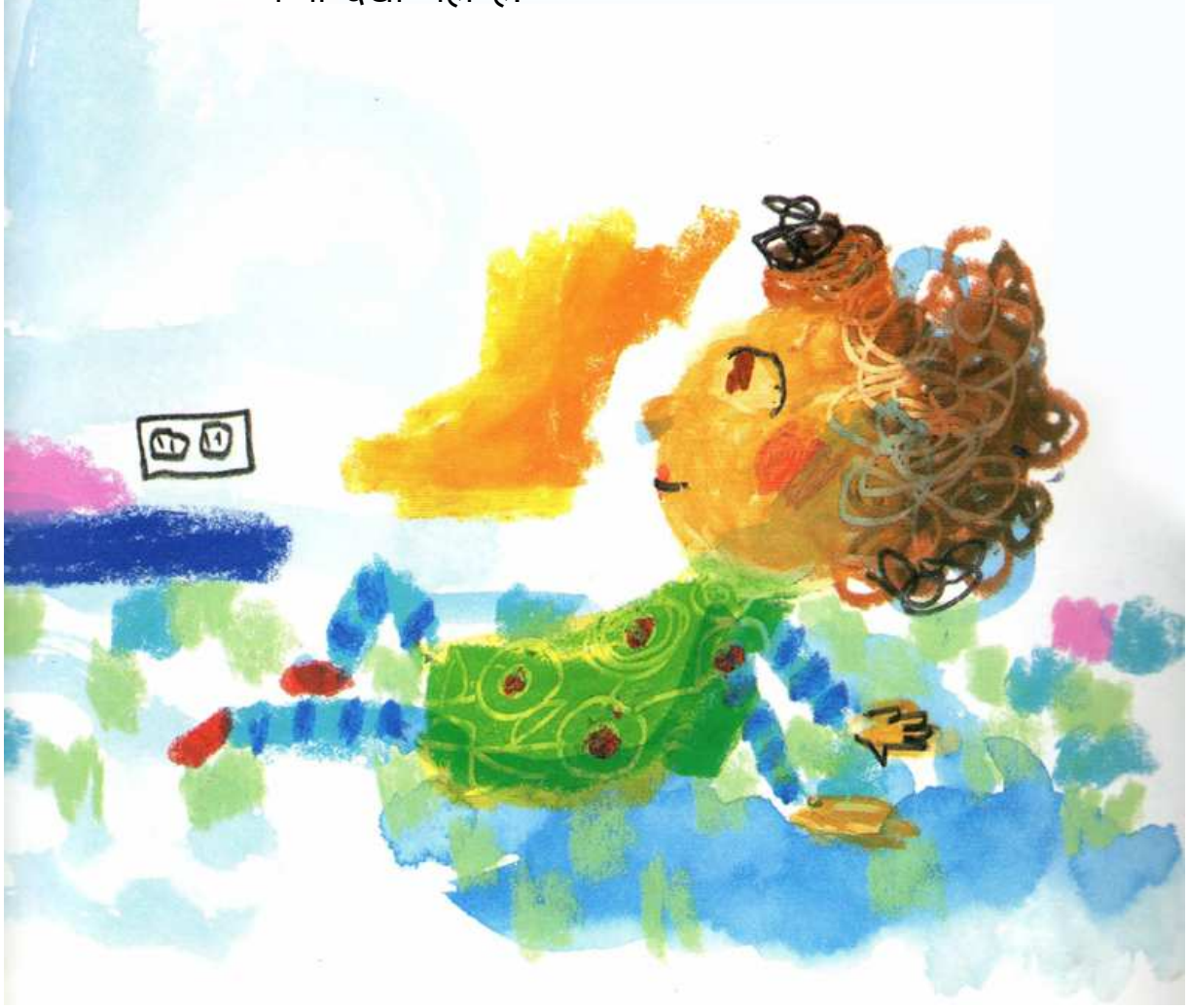

जब हम नाना और पोपी के यहाँ रहने जाते हैं तो रात का खाना भी हम किचन में ही खाते हैं. जब अँधेरा होता है तो हम अपने चेहरों के प्रतिबिम्ब खिड़की के कांच में देख सकते हैं. कांच बिलकुल आईने का काम करते हैं. पोपी को यह प्रतिबिम्ब देखकर ऐसा भ्रम होता है जैसे हम किचन के बाहर हों. वो कहते हैं, “अरे तुम बाहर क्या कर रही हो? जल्दी से अन्दर आओ और अपना खाना ख़त्म करो.”

तब मैं उनसे कहती हूँ, “अरे, मैं तो आपके पास ही हूँ, पोपी.” फिर वो मेरी ओर अजीब तरह से देखते हैं.

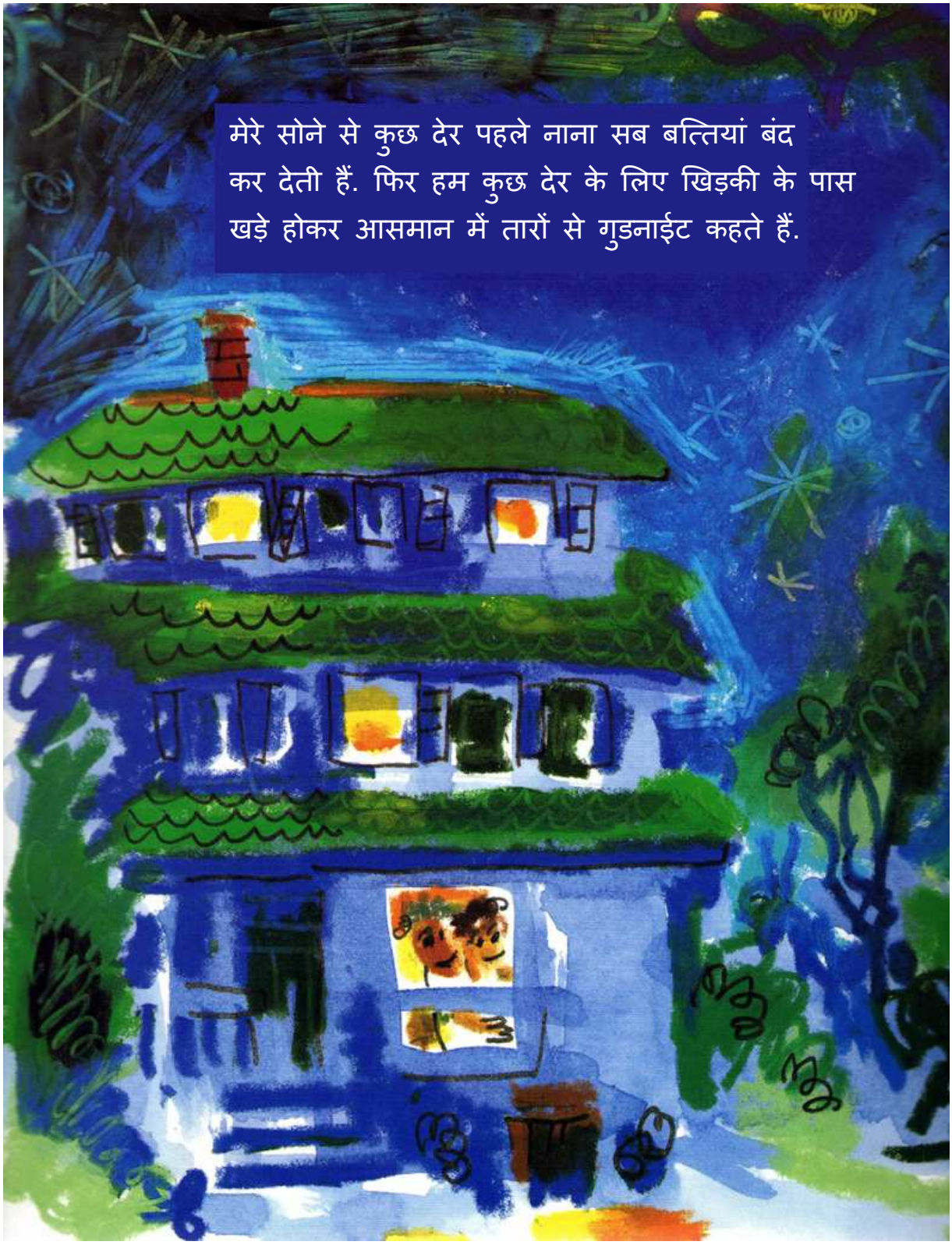
मेरे सोने से कुछ देर पहले नाना सब बत्तियां बंद
कर देती हैं. फिर हम कुछ देर के लिए खिड़की के पास
खड़े होकर आसमान में तारों से गुडनाईट कहते हैं.

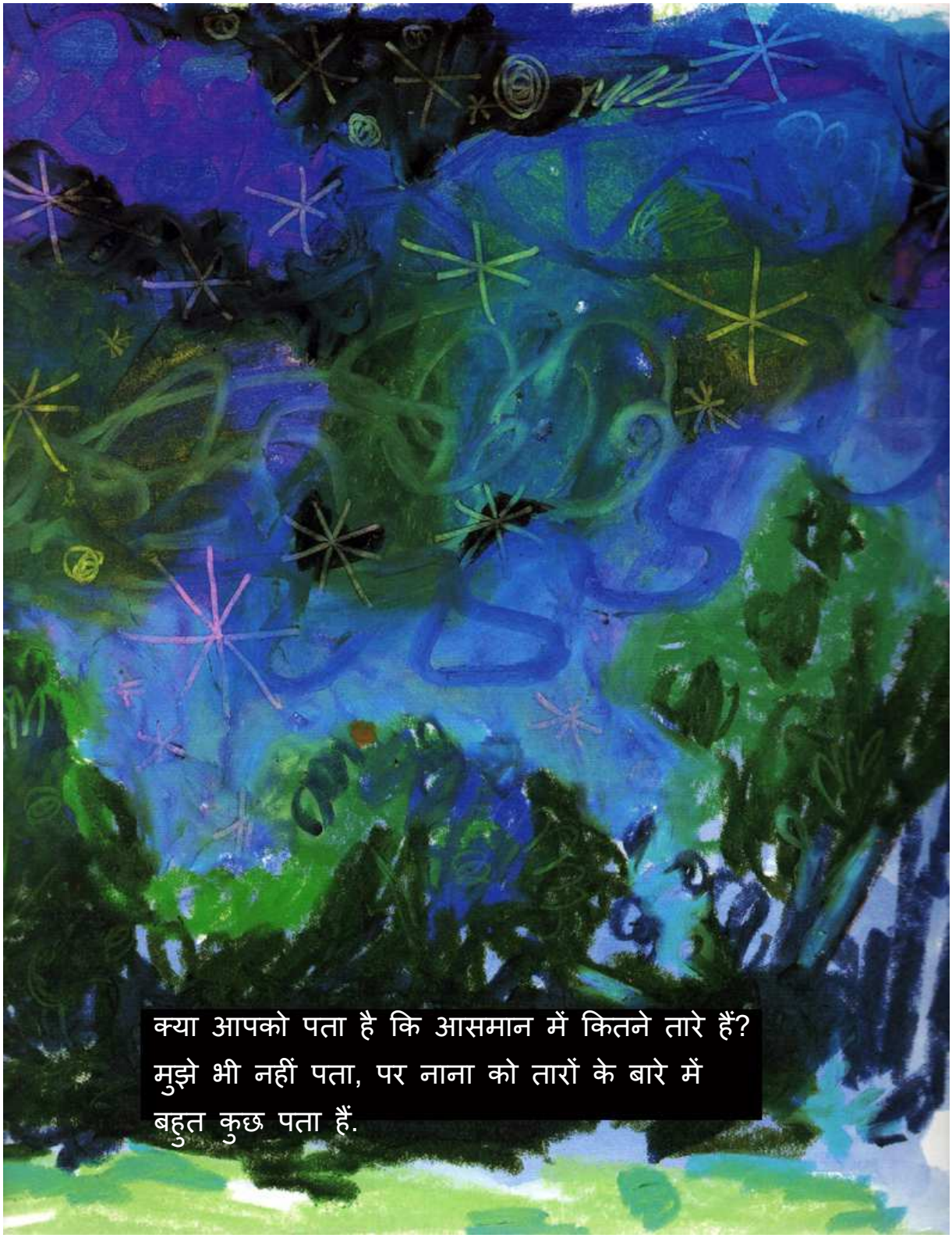
क्या आपको पता है कि आसमान में कितने तारे हैं?
मुझे भी नहीं पता, पर नाना को तारों के बारे में
बहुत कुछ पता हैं.

सुबह उठने के बाद हम सबसे पहले किचन के पीछे जाते हैं और वहां पर खिड़की हमारा इंतज़ार कर रही होती है.

आप चाहें तो बगीचे को गुड-मॉर्निंग कह सकते हैं. या फिर मौसम का अनुमान लगा सकते हैं - आज बारिश होगी, या फिर मौसम सुहाना रहेगा.

आप यह भी देख सकते हैं कि कहीं पड़ोसियों का कुत्ता नाना के फूलों की क्यारियों को खोद तो नहीं रहा है. नाना को इससे खास नफरत है.

कभी-कभी पोपी ऊंची आवाज़ में चिल्लाते हैं,

“अरे दुनिया! तुम आज हमारे लिए कौन सा नया अजूबा लाई हो?”

इसका कभी कोई जवाब नहीं मिलता है. पर इससे पोपी को कोई फर्क नहीं पड़ता है.

पोपी रोज़ाना नाश्ता बनाते हैं.
नाश्ता बनाने में वो उस्ताद हैं.

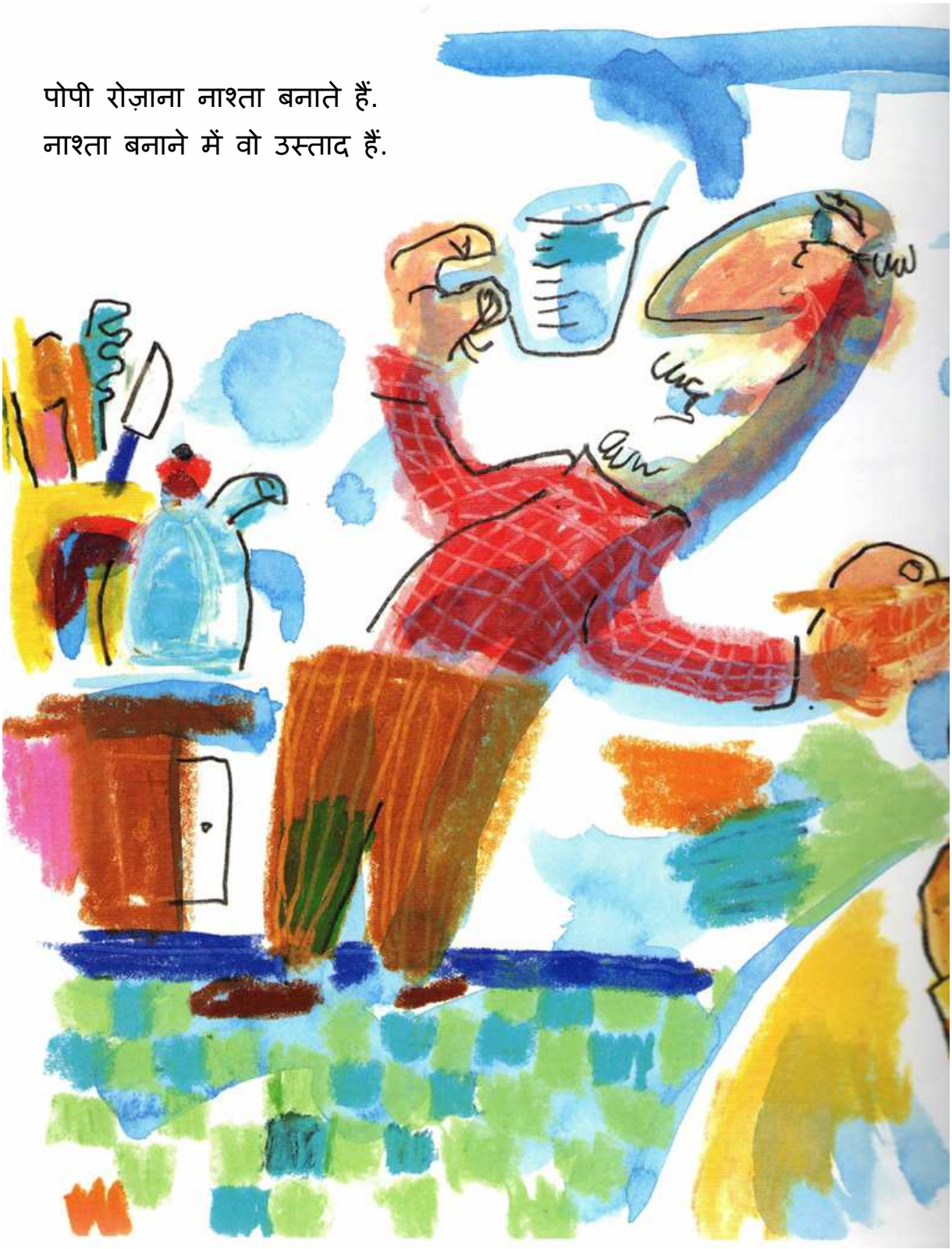

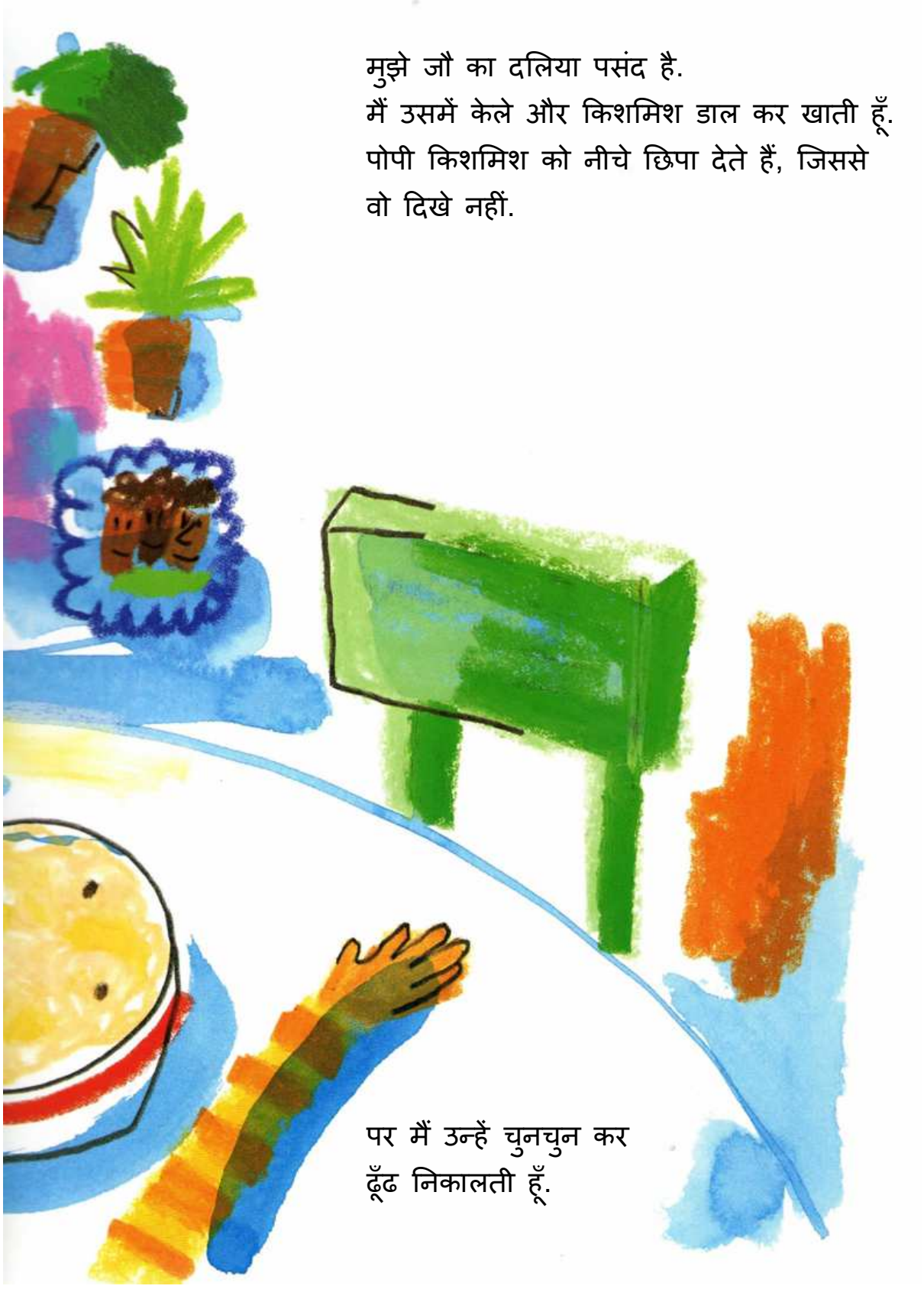

मुझे जौ का दलिया पसंद है.
मैं उसमें केले और किशमिश डाल कर खाती हूँ.
पोपी किशमिश को नीचे छिपा देते हैं, जिससे
वो दिखे नहीं.

पर मैं उन्हें चुनचुन कर
ढूँढ निकालती हूँ.

कपड़े बदलने के बाद मैं नाना की बगीचे में मदद करती हूँ. वैसे बगीचा बहुत सुन्दर है, पर उसमें बड़ी झाड़ी के पीछे एक भयानक बाघ रहता है, इसलिए मैं वहां भूलकर कभी नहीं जाती हूँ.

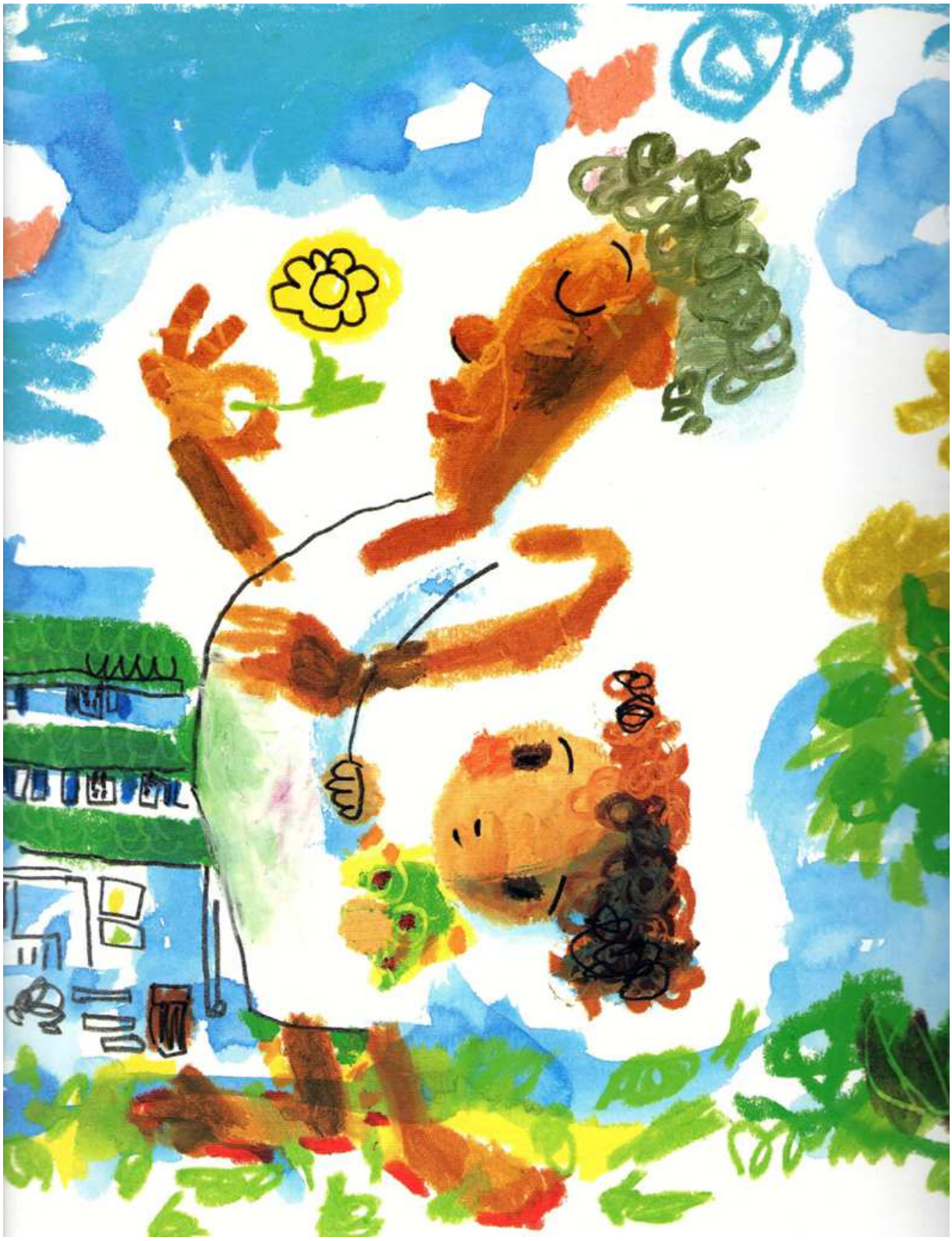

जब मैं अपनी साइकिल चलाती हूँ,
तो आवाज़ आती है,
“देखो, साइकिल बाहर सड़क
पर मत चलाना.”

जब मैं टहनियां और बलूत के फल
इकट्ठे करती हूँ, तो मैं सुनती हूँ,
“देखो, घर में यह काम मत
करना.”

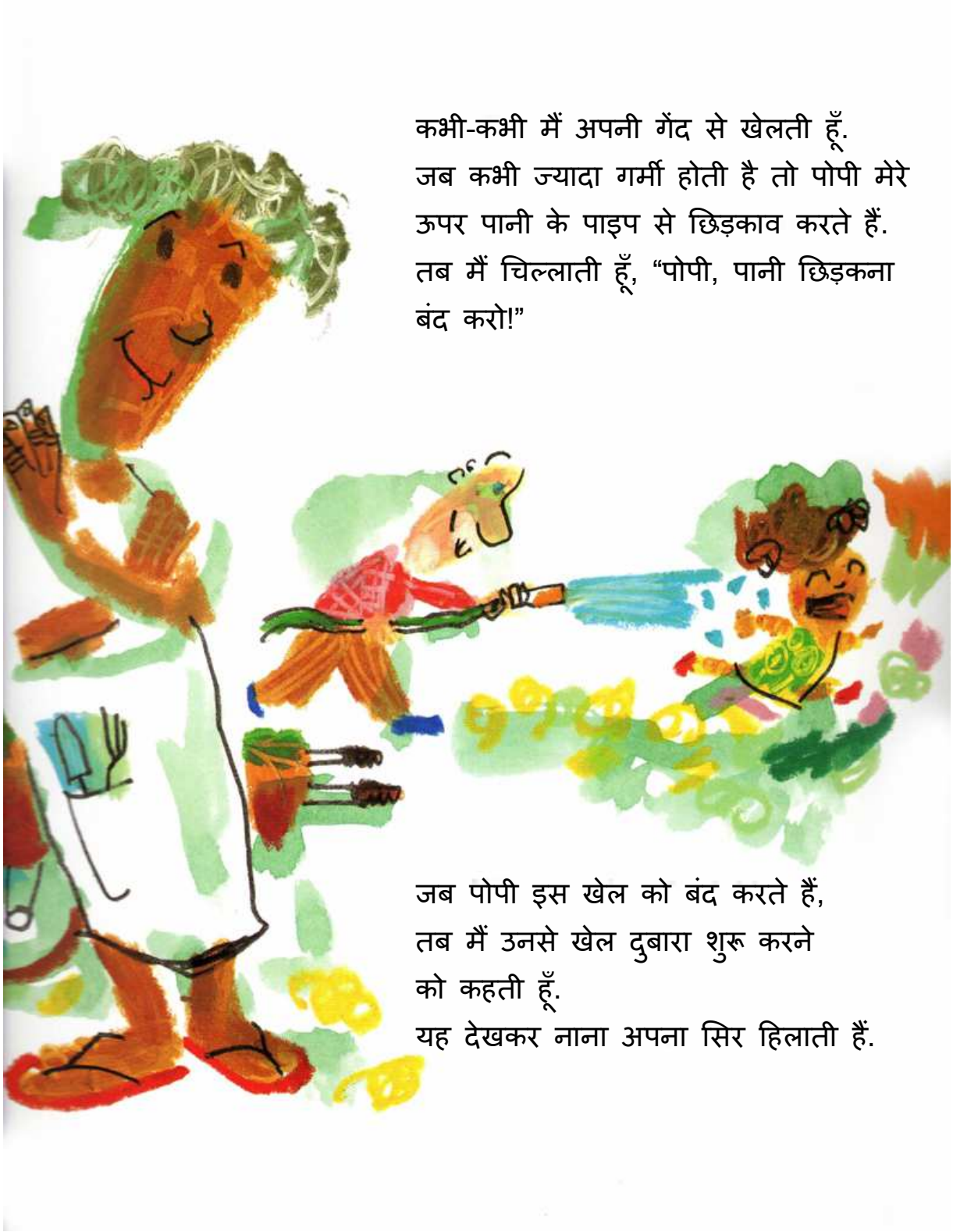

कभी-कभी मैं अपनी गेंद से खेलती हूँ.
जब कभी ज्यादा गर्मी होती है तो पोपी मेरे ऊपर पानी के पाइप से छिड़काव करते हैं.
तब मैं चिल्लाती हूँ, “पोपी, पानी छिड़कना बंद करो!”

जब पोपी इस खेल को बंद करते हैं,
तब मैं उनसे खेल दुबारा शुरू करने
को कहती हूँ.
यह देखकर नाना अपना सिर हिलाती हैं.

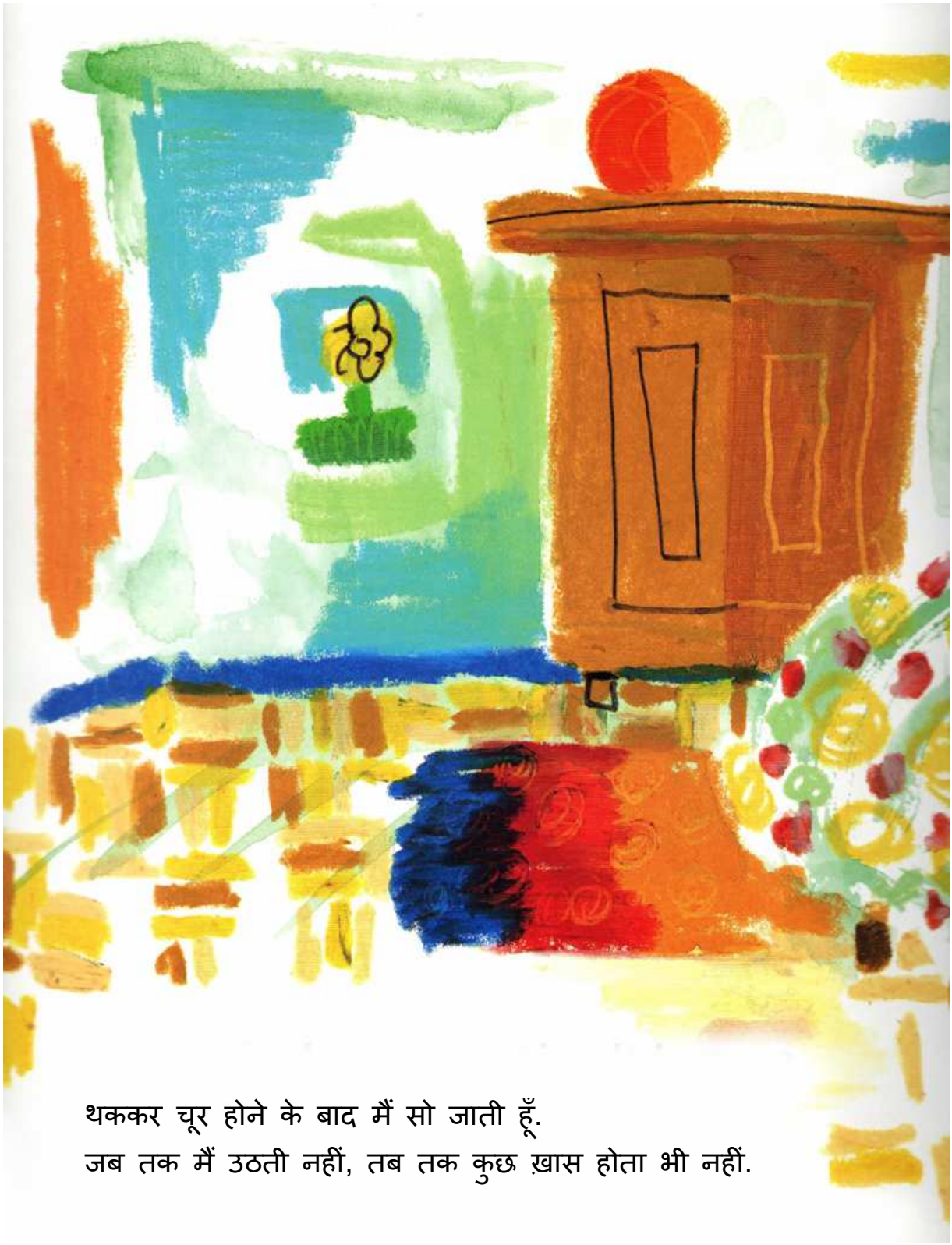

थककर चूर होने के बाद मैं सो जाती हूँ.
जब तक मैं उठती नहीं, तब तक कुछ ख़ास होता भी नहीं.

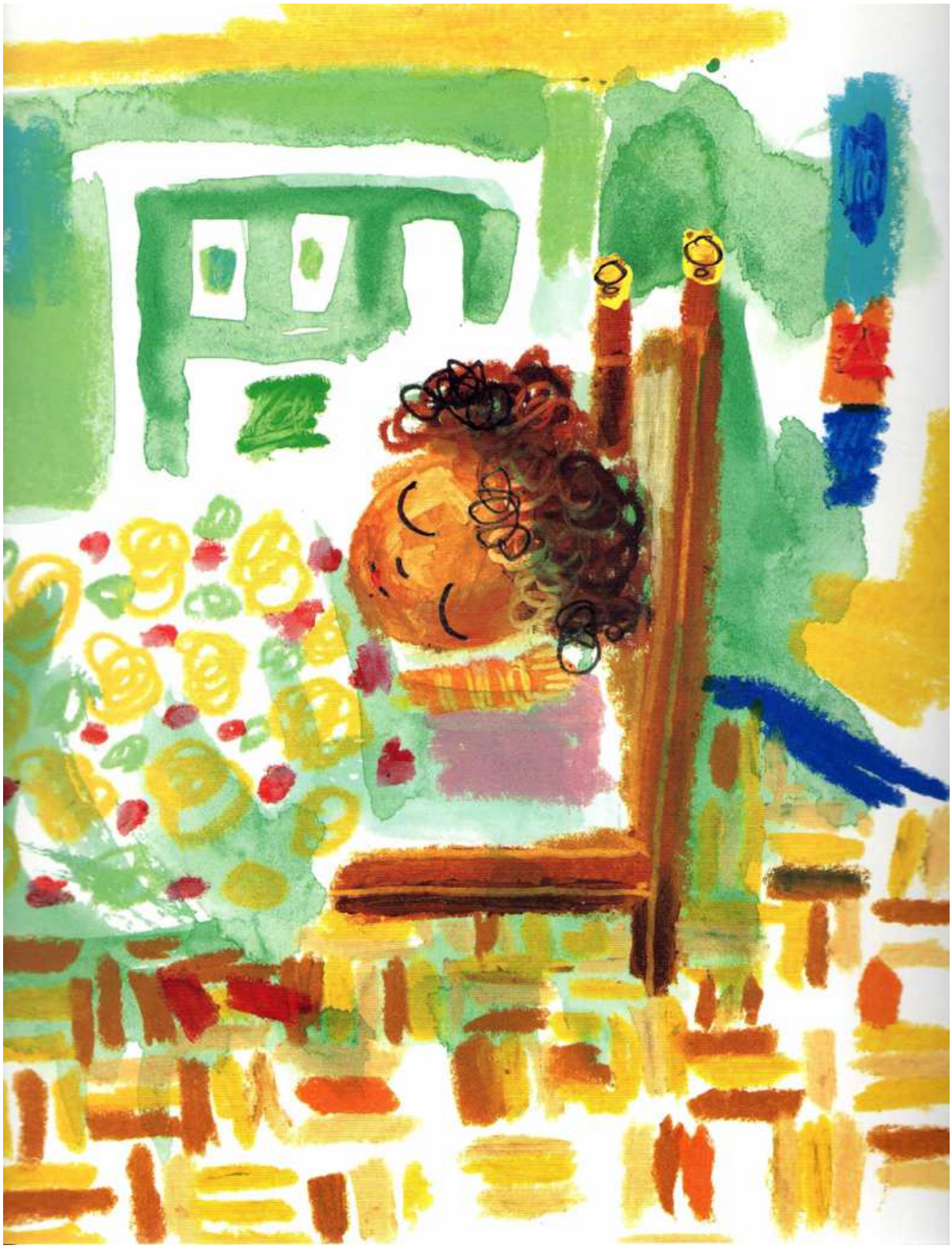

कई बार मैं हेलो, गुड-बाई खिड़की के पास बैठकर बाहर का नज़ारा देखती हूँ.
नाना कहती हैं कि वो एक जादुई खिड़की है,
और वहां कोई, कभी भी आ सकता है.

जैसे डायनासोर
(क्यूंकि वो अब लुप्त हो चुका है, इसलिए वो अब ज्यादा बार नहीं आता)

पिज़्ज़ा डिलीवरी वाला लड़का
(उसे मालूम है मुझे पनीर और मिर्ची वाले पिज़्ज़ा पसंद हैं)

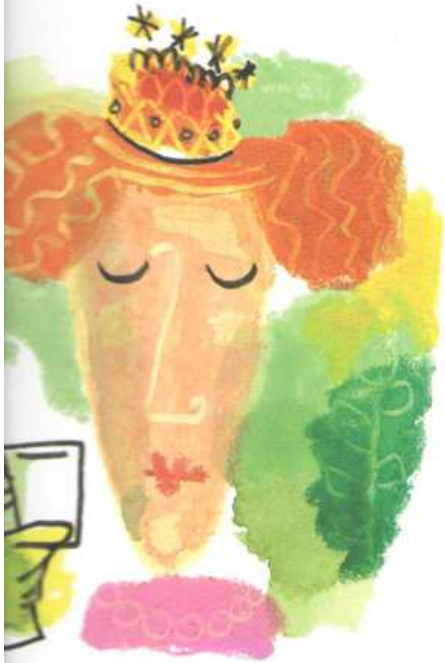

इंग्लैंड की महारानी
(क्यूंकि नाना इंग्लिश हैं इसलिए इंग्लैंड की महारानी
अक्सर उनके साथ चाय पीने आती हैं)

उन सभी का स्वागत है! उनके साथ-साथ औरों का भी स्वागत है.
और जब वो आयेंगे, तो मैं ही उनसे सबसे पहले मिलूंगी.

मम्मी-डैडी दिन का काम ख़त्म करने के बाद
मुझे नाना-पोपी के घर से लेते हैं.
क्यूंकि मैं घर जा रही होती हूँ इसलिए मैं खुश होती हूँ.
पर नाना-पोपी को छोड़ कर जाने का मुझे दुःख भी होता है.
आप चाहें तो एक ही समय खुश और दुखी दोनों हो सकते हैं.
कभी-कभी ऐसा भी होता है.

जाते वक़्त हम हमेशा खिड़की पास रुककर उसे गुड-बाई
की एक पुच्ची देते हैं.

बाहर से देखते समय हमें
नाना-पोपी के घर की अन्य कई खिड़कियाँ दिखाई देती हैं.
पर उनमें से सिर्फ एक ही हेलो, गुड-बाई खिड़की है.
वो उस जगह स्थित है, जहाँ आपको उसकी सबसे
ज्यादा ज़रुरत पड़ती है.

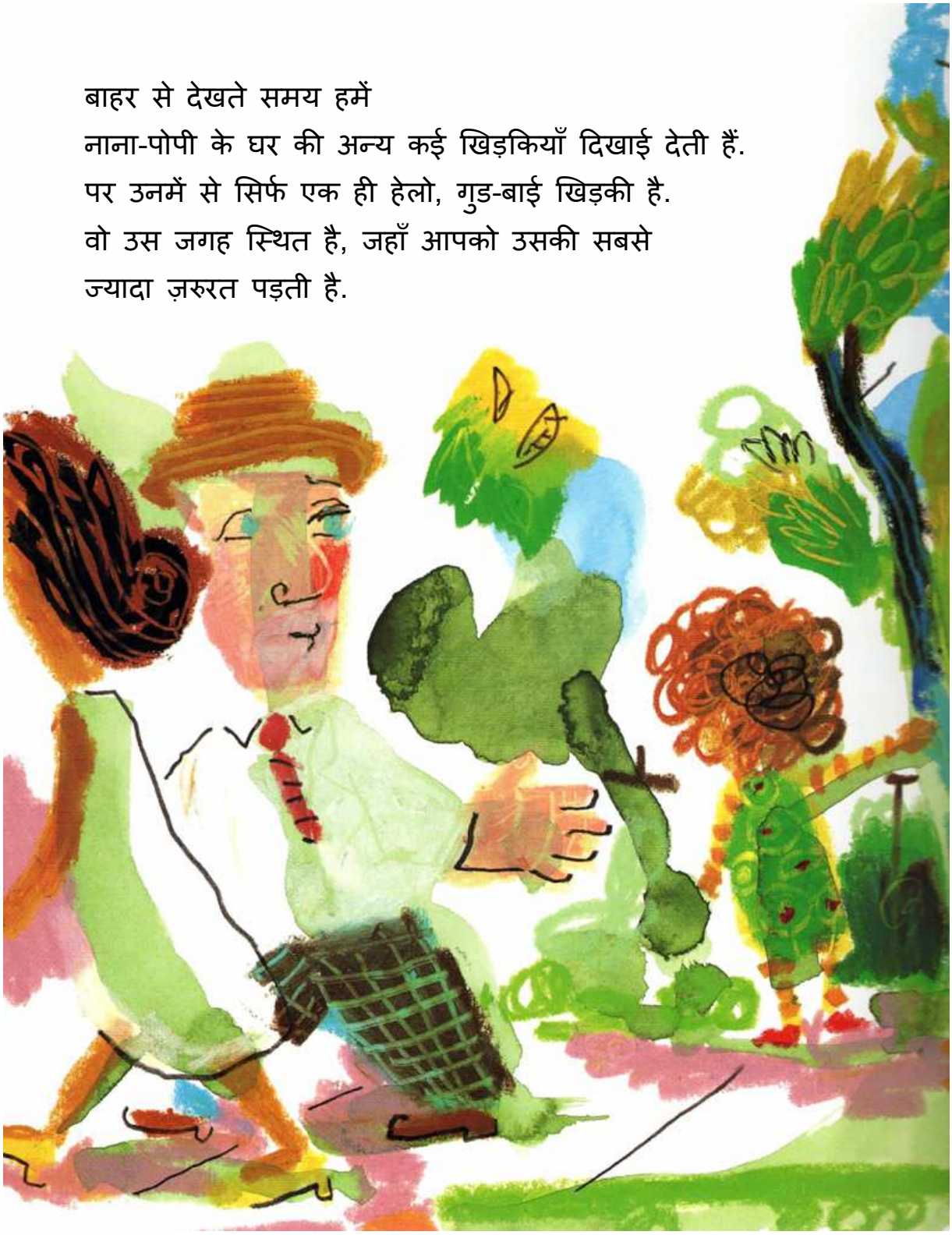

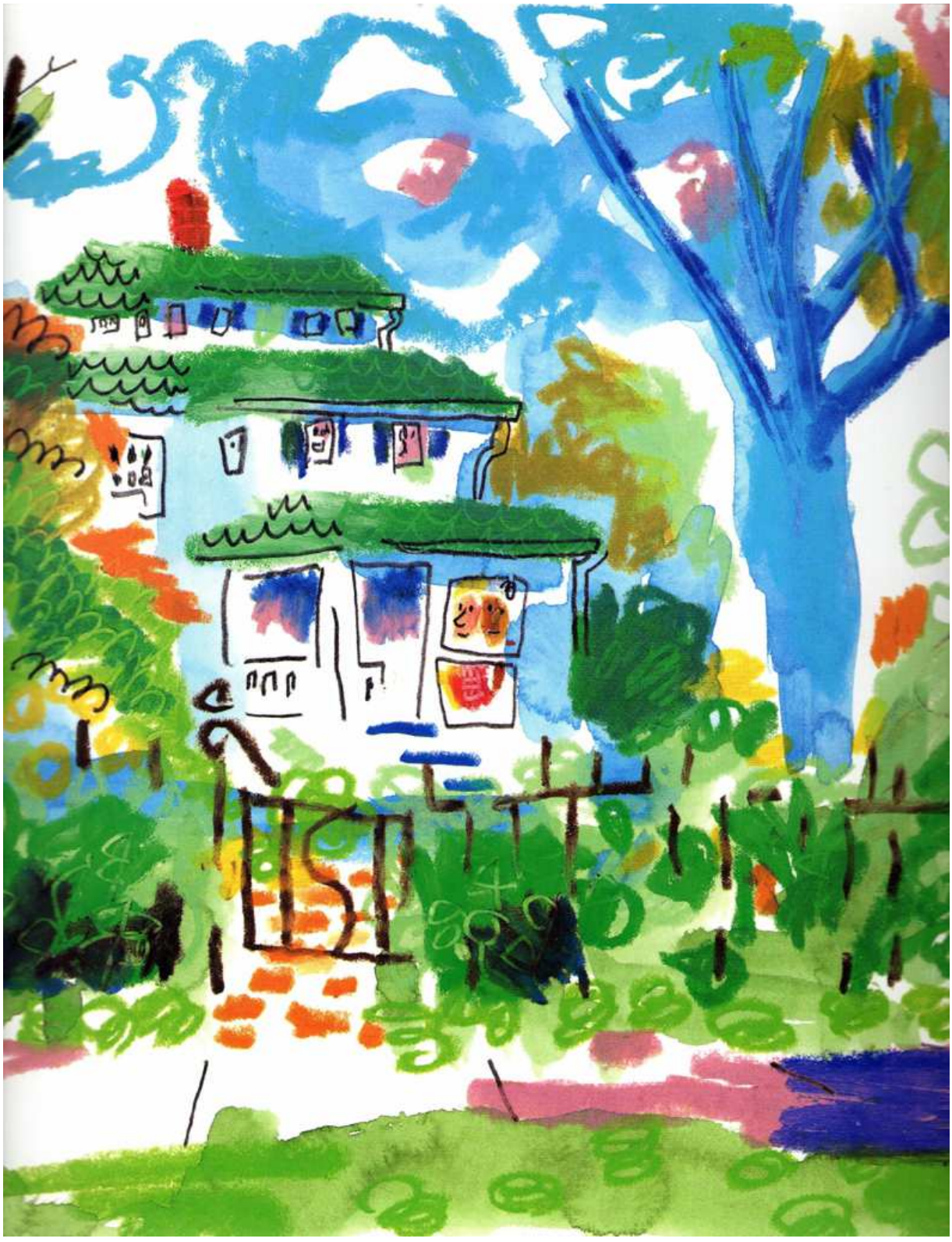

एक दिन कभी मेरा खुद का अपना घर भी होगा,
तो मेरे घर में भी एक
हेलो, गुड-बाई खिड़की ज़रूर होगी.
तब शायद मैं भी किसी बच्ची की नानी होउंगी
मुझे पता नहीं मेरा पति कौन होगा,
पर अच्छा होगा, अगर उसे माउथऑर्गन बजाना आता हो.

नॉर्टन जस्टर पेशे से एक रिटायर्ड आर्किटेक्ट और टीचर हैं. वो एक लेखक बनने का प्रयास कर रहे हैं. उन्होंने बच्चों की कई किताबें लिखीं हैं. बच्चों के लिए उनकी यह पहली चित्र पुस्तक है.

क्रिस रश्का बच्चों की पुस्तकों के जाने-माने चित्रकार हैं. उनकी एक पुस्तक मशहूर काल्देकोट हॉनर से सम्मानित भी हुई है.